International Journal of Applied Research 2020; 6(1): 186-188

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(1): 186-188
www.allresearchjournal.com
Received: 12-11-2019
Accepted: 17-12-2019

मुकेश कुमार महतो
शोधार्थी, हिन्दी–विभाग,
ललित नारायण मिथिला
विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार,
भारत

Corresponding Author:
मुकेश कुमार महतो
शोधार्थी, हिन्दी–विभाग,
ललित नारायण मिथिला
विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार,
भारत

प्रसादोत्तर हिन्दी नाटकों का विषय और शिल्प

मुकेश कुमार महतो

सारांश
नाटक–जयशंकर प्रसाद के बाद हिन्दी नाटक विषय–वस्तु और शिल्प की दृष्टि से और अधिक समृद्ध हुए। विषयगत वैविध्य की दृष्टि से पौराणिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक और समस्याप्रधान नाटकों का सृजन हुआ। यहाँ तक आते–आते पौराणिक नाटकों की लोकप्रियता में कमी आने लगी थी इसलिए इनकी संख्या में कमी भी आई। फिर भी कुछ नाटकों ने अपनी अभीष्ट छाप छोड़ी। इस युग के पौराणिक नाटकों में उदयशंकर भट्ट कृत 'अम्बा' और 'सागर विजय', सेठ गोविन्द दास कृत 'कर्त्तव्य', चतुरसेन शास्त्री कृत 'मेघनाद', हरिकृष्ण 'प्रेमी' कृत 'पाताल–विजय', पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' कृत 'गंगा का बेटा', कैलाशनाथ भटनागर कृत 'भीमप्रतिज्ञा' और श्रीवत्स तथा देवराज कृत 'रावण' उल्लेखनीय हैं। इन नाटकों की विशेषता यह है कि इनमें आधुनिकता का भी समावेश किया गया है। 'अम्बा' का कथानक पौराणिक होते हुए भी आधुनिक नारी समस्या को प्रस्तुत करता है। सेठ गोविन्ददास के 'कर्ण' में जाति–पाँति की समस्या को उठाया गया है। कहने का तात्पर्य यह है कि इन पौराणिक नाटकों में वर्तमान जीवन की उन समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है जो हमारे समाज के लिए गर्हित है। इसके लिए व्यंग्यात्मक शैली अपनाई गई है ताकि समाज के अंधविश्वासों एवं रूढ़ियों पर प्रहार किया जा सके और मानव जीवन के बृहत्तर मूल्यों को सुगमतापूर्वक स्थापित किया जा सके।

मुख्य शब्दः नाटक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक

प्रस्तावना
इस युग में ऐतिहासिक नाटकों की परम्परा का पर्याप्त विकास हुआ। मुस्लिम, राजपूत और मराठाकालीन ऐतिहासिक घटनाओं को आधार बनाकर अनेक नाटक लिखे गये। इनमें भारत के वीरों के पराक्रम, साहस और देशभक्ति का गौरव गान तथा आन्तरिक कलह और संकीर्ण मानसिकता के दुष्परिणामों का वर्णन हुआ। हरिकृष्ण प्रेमी, वृन्दावन लाल वर्मा, गोविन्द वल्लभ पंत, चन्द्रगुप्त विद्यालंकार, सेठ गोविन्ददास, उदयशंकर भट्ट आदि नाटककारों ने ऐतिहासिक नाटकों का सृजन कर जन–जागृति लाने का प्रयास किया। हरिकृष्ण प्रेमी के नाटकों में 'रक्षाबन्धन', 'शिवा साधना', 'प्रतिरोध', 'स्वप्नभंग', 'आहुति' और 'उद्धार' आदि महत्त्वपूर्ण हैं। प्रेमीजी ने मुस्लिम कालीन भारतीय इतिहास का संदर्भ लेते हुए आधुनिक युग की अनेक राजनीतिक, सामाजिक एवं साम्प्रदायिक तथा राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया है। अपने युग के राष्ट्रीय आन्दोलनों और एकता के प्रश्न से प्रभावित होकर उन्होंने अपने नाटकों में हिन्दू–मुस्लिम एकता का प्रयास किया। उनके नाटक स्वतंत्रता संग्राम के लिए जन–जागरण लाने में सफल भूमिका का निर्वाह कर सके हैं। इस युग के अन्य नाटककारों में उदयशंकर भट्ट (दाहर), गोविन्द वल्लभ पंत (राजमुकुट), उपेन्द्रनाथ अश्क (जय–पराजय), वृन्दावन लाल वर्मा (झाँसी की रानी), सत्येन्द्र (मुक्तियज्ञ) आदि उल्लेखनीय हैं। गोविन्ददास कृत 'कुलीनता' में देश की सामाजिक समस्या को लेकर कर्मजात पर जोर दिया गया है। 'दाहर' में उदयशंकर भट्ट ने वर्णभेद, प्रांतभेद आदि को वर्ण विषय बनाया है। इस युग के सभी ऐतिहासिक नाटक राष्ट्रीय चेतना को उद्‌बुद्ध करने तथा सामाजिक समस्याओं पर नई दृष्टि से विचार करके समाधान प्रस्तुत करने के उद्देश्य से लिखे गये हैं। सांस्कृतिक चेतना से युक्त नाटक भी इस युग में सृजित हुए। इस दृष्टि से चन्द्रगुप्त विद्यालंकार कृत 'अशोक' और 'रेवा', सेठ गोविन्ददास कृत 'शशिगुप्त', उदयशंकर भट्ट कृत 'मुक्तिपथ', सियाराम शरण गुप्त कृत 'पुण्य–पाप', लक्ष्मीनारायण मिश्र कृत 'गरुण ध्वज' और गोविन्द वल्लभ पंत कृत 'अन्तःपुर का छिद्र' आदि उल्लेखनीय हैं। इनके कथानक इतिहास पर आधारित है लेकिन सांस्कृतिक पुनरुत्थान की चेतना सभी में मौजूद है। इनकी सांस्कृतिक पुनरुत्थान की चेतना बहुत कुछ प्रसाद के नाटकों की भाँति है, लेकिन प्रसाद के नाटकों के समान इनमें भावुकता, दार्शनिकता एवं भाषागत जटिलता नहीं है। इसलिए ये अधिक स्वाभाविक एवं रंगमंच के अनुकूल हैं।

पाश्चात्य नाटककारों मुख्यतः डव्लन और वर्नादशॉ की यथार्थवाटी चतना ने प्रभावित होकर हिन्दी नाटककारों ने समस्या नाटकों के सृजन की और अपना ध्यान केन्द्रित किया। फ्रायड के अनुसार व्यक्ति की व्यापक समस्या 'काम समस्या' है। सभी कार्यों के मूल में यही भावना है। शायद इसीलिए समस्या नाटकों में 'यौन समस्या' को प्रमुखता के साथ वर्णित किया गया है। व्यक्तिगत समस्याओं का, उलझनों और मानसिक द्वन्द्वों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण हुआ है। हिन्दी में समस्या नाटक के अधिष्ठता के रूप में लक्ष्मीनारायण मिश्र का नाम उल्लेखनीय है। मिश्र जी के समस्या नाटकों में 'संन्यासी', 'राक्षस का मन्दिर', 'मुक्ति का रहस्य', 'राजयोग', 'सिन्दूर की होली', 'आधी गत' आदि प्रमुख हैं। इन नाटकों में बुद्धिवाद और यथार्थवाद का प्राधान्य है। प्रेम–विवाह और काम की समस्याओं का निर्भीकता के साथ प्रतिपादन है। भावुकतावादी रोमांस का विरोध है। मिश्र जी के प्रयासों से हिन्दी नाट्य क्षेत्र में नवीनता का समावेश हुआ।

इस युग में सामाजिक एवं राजनीतिक समस्याओं का आधार बनाकर अनेक नाटक लिखे गये। इस दृष्टि से सेठ गोविन्ददास, उपेन्द्रनाथ अश्क, वृन्दावनलाल वर्मा आदि के योगदान महत्त्वपूर्ण हैं। गोविन्ददास के नाटक 'सिद्धान्त स्वातंत्र्य', 'सेवापथ', 'महत्त्व किसे', 'संतोष कहाँ', 'गरीबी और अमीरी' में सामाजिक, राजनीतिक समस्याओं का चित्रण है। उपेन्द्रनाथ अश्क के नाटकों में 'स्वर्ग की झलक', 'कैद', 'उड़ान', 'छठाबेटा' आदि उल्लेखनीय है। 'स्वर्ग की झलक' में स्त्री शिक्षा की समस्या को व्यंग्यात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। 'छठाबेटा' एक स्वप्ननाटक है जिसके माध्यम से यह दिखाने का प्रयास किया है कि मनुष्य अपनी इच्छाओं की पूर्ति स्वप्न में करना चाहता है। अश्क के नाटकों में नारी शिक्षा, नारी स्वातंत्र्य, विवाह–समस्या, संयुक्त परिवार से सम्बन्धित अनेक सामाजिक समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है। इनके नाटक अभिनय की दृष्टि से सफल हैं। सामाजिक एवं राजनीतिक समस्याओं को आधार बनाकर अन्य नाटक भी लिखे गये जिनमें कुछ उल्लेखनीय हैं–वृन्दावनलाल वर्मा कृत 'धीरे–धीरे', 'राखी की लाज' एवं 'बाँस की फाँस' गोविन्द वल्लभ पंत कृत 'अंगूर की बेटी' एवं 'सिन्दूर की विन्दी', पृथ्वीनाथ शर्मा कृत 'अपराधी' एवं 'साध' आदि उदयशंकर भट्ट कृत 'कमला' एवं 'क्रांतिकारी' आदि उल्लेखनीय हैं। इन नाटकों में विभिन्न परिस्थितियों एवं समस्याओं का सफल अंकन है।

इनके अतिरिक्त आलोच्य युग में नीति नाट्य, प्रतीक नाटक और एकांकी नाटक भी लिखे गये।

जयशंकर प्रसाद ने करुणालयश की रचना करके हिन्दी गति नाट्य की जिस परम्परा की शुरुआत की, उसका. विकसित रूप इस काल में उपलब्ध होता है। इस युग के प्रमुख गीतिनाट्यकार उदयशंकर भट्ट हैं। 'विश्वामित्र', 'राधा' और 'मत्स्यगंधा' आदि इनके गीतिनाट्य है। जिनमें काव्यकला और नाट्यकला का सुंदर समावेश है। सेठ गोविन्ददास और भगवती चरण वर्मा के क्रमशः 'स्नेह या स्वर्ग' और 'तारा' भी सफल गीतिनाट्य हैं।

जयशंकर प्रसाद ने 'कामना' नाटक के द्वारा प्रतीकवादी नाटकों की ओर लेखकों का ध्यान आकृष्ट किया था। सुमित्रानन्दन पंत ने 'ज्योत्स्ना', भगवती प्रसाद वाजेपयी ने 'छलना' और सेठ गोविन्ददास ने 'नवरस' जैसे प्रतीकवादी नाटकों की रचना करके इस परम्परा को आगे बढ़ाया। स्वातंत्र्योत्तर काल में प्रतीकवादी नाटकों का तीव्र गति से विकास हुआ।

प्रसाद के 'एक चूंट' से एकांकी नाटकों की जिस परम्परा का श्रीगणेश हुआ उसे इस काल के एकांकीकागं ने चरमोत्कर्ष पर पहुँचाया। भुवनेश्वर प्रसाद, डॉ० रामकुमार वर्मा, उपन्द्रनाथ अश्क, जगटीशचन्द्र माथुर, विष्णु प्रभाकर और उदय शंकर भट्ट आदि एकांकीकारों ने कलात्मकता और तीव्रता के साथ एकांकी को प्रगति के पथ पर अग्रसरित किया।

स्वतंत्रता के बाद हिन्दी नाटकों में वस्तुगत वैविध्य आया। शिल्प की दृष्टि से अनेक नये प्रयोग हए। स्वातंत्र्योत्तर नाटक साहित्य को पौराणिक, ऐतिहासिक, जीवनीपरक, समस्यानाटक, सिनेनाटक, एकांकी, गीतिनाटक, रेडियोनाटक, प्रतीकात्मक आदि उपखण्डों में विभक्त करके अध्ययन किया जा सकता है।

पौराणिक नाटक कम ही लिखे गये फिर भी चतुरसेन शास्त्री कृत 'गांधारी', रांगेय राघव कृत 'स्वर्ग भूमि का यात्री', गोविन्द वल्लभ पंत कृत 'ययाति', पृथ्वीनाथ शर्मा कृत 'उर्मिला' आदि पौराणिक नाटकों की रचना हुई। लक्ष्मीनारायण मिश्र का चक्रव्यूह भी इस दृष्टि से उल्लेख्य है।

इस युग में ऐतिहासिक और सामाजिक नाटकों की रचना हुई जिनमें सांस्कृतिक तत्त्वों का प्रमुखता के साथ समावेश है। इस दृष्टि से उदय शंकर भट्ट का 'शक विजय', वृन्दावनलाल वर्मा का 'पूर्व की ओर', लक्ष्मीनारायण मिश्र कृत 'दशाश्वमेघ', 'वत्सराज', 'वितस्ता की लहरें', 'नारद की वीणा' आदि हरिकृष्ण प्रेमी कृत 'शपथ', देवराज दिनेश कृत 'यशस्वी भोज', सर्वदानन्द वर्मा कृत 'भूमिजा' आदि नाटक उल्लेख्य हैं। ये सभी नाटक किसी न किसी सांस्कृतिक वैशिष्ट्य को आधार बनाकर लिखे गये हैं। जगदीश चन्द्र माथुर कृत 'पहला राजा' और 'दशरथनन्दन' में आदर्शोन्मुखी दृष्टि से सामाजिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा के लिए नाट्योचित दृष्टि का सार्थक उपयोग किया गया है। माथुर जी का 'कोणार्क' अपने शिल्पगत वैशिष्ट्य के लिए प्रसिद्ध है। हरिकृष्ण प्रेमी के नाटक 'उद्धार', 'प्रकाश स्तम्भ' और 'कीर्तिस्तम्भ' अपने नाट्य–शिल्प के कारण अधिक चर्चित हुए हैं। विष्णु प्रभाकर ने 'डॉक्टर', 'युगे–युगे क्रांति', 'टूटते परिवेश' आदि में पारिवारिक एवं सामाजिक समस्याओं को चित्रित किया है।

जीवनीपरक नाटकों में लक्ष्मीनारायण मिश्र का 'कवि भारतेन्दु' तथा सेठ गोविन्ददास के 'भारतेन्दु' और 'रहीम' उल्लेखनीय हैं। इनमें इतिहास भी है और कल्पना भी। जीवन की घटनाओं का वर्णन स्वाभाविक है। अभिनय की दृष्टि से ये सभी सफल हैं।

इस युग में समस्या नाटकों के स्वरूप में थोड़ा परिवर्तन हुआ। प्रेम–विवाह और काम समस्या गौण हो गये तथा वर्तमान सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक समस्याओं ने प्रमुख स्थान ग्रहण कर लिया। इस युग के समस्या नाटकों में सेठ गोविन्ददास कृत 'सुख किसमें' और 'भूदान यज्ञ', वृन्दावनलाल वर्मा कृत 'खिलौने की खोज', 'नीलकंठ' और 'केवर' आचार्य चतुर सेन शास्त्री कृत 'पगध्वनि', विष्णु प्रभाकर कृत 'चन्द्रहार', उपेन्द्रनाथ अश्क कृत 'पैंतरे' तथा 'अलग–अलग रास्ते', शम्भूनाथ सिंह कृत 'धरती और आकाश' और लक्ष्मीनारायण लाल कृत 'अंधाकुँआ' आदि उल्लेखनीय हैं। इनमें सामाजिक असमानता–छुआछूत आदि की समस्या को चित्रित किया गया है। प्रेम–विवाह और यौन समस्याओं की भी अभिव्यक्ति हुई है।

डॉ० रामकुमार वर्मा और भगवतीचरण वर्मा ने चित्रपट की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर सिने नाटकों की रचना की। डॉ० रामकुमार वर्मा का 'स्वप्न चित्र' तथा भगवतीचरण वर्मा का 'वासवदत्त का चित्रलेख' इसी प्रकार के नाटक हैं।

गीति नाटकों की परम्परा में सुमित्रानन्दन पंत ('रजत शिखर' और 'शिल्पी') डॉ० धर्मवीर भारती (अंधायुग) तथा सिद्धनाथ कुमार (लौह देवता) के नाम महत्त्वपूर्ण हैं।

इस समय एकांकी नाटक अधिक संख्या में लिख गये। हिन्दी एकांकियों पर रेडियो का प्रभाव तीव्रता से पड़ा है। नाटककार रेडियो की आवश्यकताओं के अनुरूप रेडियोनाटक तथा एकांकी लिख रहे हैं। इनकी व्यापकता और विविधता के कारण इनका स्वंतत्र अध्ययन अपेक्षित है और उचित भी।

प्रतीकात्मक नाटकों में विष्णु प्रभाकर कृत 'दृष्टि की खोज' तथा 'बाज और कबूतर', गिरिजा कुमार माथुर कृत 'पृथ्वीकल्प', अज्ञेय कृत 'वसंत', धर्मवीर भारती कृत 'नीली झील' तथा लक्ष्मीनारायण लाल कृत 'मादा कैक्टस', 'सुंदर रस' और 'सूखा सरोवर' उल्लेखनीय हैं। डॉ० लाल के 'मादा कैक्टस' में व्यंग्यात्मक ढंग से उन व्यक्तियों का चित्रण है जो भीतर से खोखले होते हैं, लेकिन बाहर गम्भीरता का आवरण चढ़ाये रखते हैं। 'सुंदर रस'

और 'सूखा सरोवर' की प्रतीक व्यंजना अपने आप में विलक्षण हैं। डॉ० लाल के अन्य नाटकों में 'रातरानी', 'दर्पण', 'करफ्यू', 'अब्दुल्ला दिवाना', 'एक सत्य हरिश्चन्द्र', 'मिस्टर अभिमन्यु' आदि महत्त्वपूर्ण हैं। इनमें सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं का निरूपण है। डॉ० लाल ने हिन्दी नाटक तथा रंगमंच को एक नई दिशा दी है।

व्यक्तिवादी चेतना–सम्पन्न नाटककारों में मोहन राकेश का नाम अग्रगण्य है। अपने नाटक 'आषाढ़ का एक दिन', 'लहरों के राजहंस' तथा 'आधे अधूरे' के द्वारा उन्होंने जो ख्याति प्राप्त की है, वह अन्य नाटककारों को नहीं मिल सकी है। इन प्रथम दो नाटकों में व्यक्ति के अहं, काम, प्रेम आदि से सम्बन्धित अन्तर्द्वन्द्व की सफल व्यंजना हुई है। 'आधे अधूरे' में परिवार एवं दाम्पत्य जीवन के विघटन को रेखांकित किया गया है। रंगमंच और अभिनय की दृष्टि से राकेश के नाटक सफल हैं। वस्तुतः राकेश एक समर्थ प्रतिभा सम्पन्न नाटककार हैं।

स्वतंत्रता के बाद हिन्दी नाटकों की गति और तीव्र हुई है। अन्य अनेक नाटककार जिन्होंने हिन्दी नाटक साहित्य को समृद्ध करने का प्रयास किया है, महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है–उनमें प्रमुख हैं–नरेश मेहता का 'सुबह के घंटे' लक्ष्मीकांत वर्मा का 'खाली कुर्सी की आत्मा', शिवप्रसाद सिंह का 'घाटियाँ गूंजती हैं', मन्नू भंडारी का 'बिना दीवारों का घर', सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का 'बकरी', 'मुद्राराक्षस', 'तिलचट्टा', शंकर शेष का 'एक और द्रोणाचार्य', भीष्म साहनी का 'हानूश' और 'कबिरा खड़ा बाजार में', विमला रैना का 'तीन युग', सर्वदानन्द का 'भूमिजा', श्रीमती कुसुम कुमार का 'दिल्ली ऊँचा सुनती है', सुरेन्द्र वर्मा का 'सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक', मणिमधुकर का 'रसगंधर्व', सुशील कुमार सिंह का 'सिंहासन खाली है', ज्ञानदेव अग्निहोत्री का 'शुतुरमुर्ग', गिरिराज किशोर का 'प्रजा ही रहने दो', हमीदुल्ला का 'समय–सन्दर्भ', प्रभात कुमार भट्टाचार्य का 'काठमहल' आदि।

आज हिन्दी रंगमंच पर प्रस्तुत होने वाले नाटकों में अनूदित नाटकों की संख्या अधिक है। रंग शालाओं में नाट्य प्रस्तुति के अतिरिक्त अन्य प्रस्तुति माध्यम भी अपनी सक्रिय भागीदारी से लोक प्रियता अर्जित कर रहे हैं। इनमें नुक्कड़ नाटक महत्त्वपूर्ण हैं। इसके साथ ही टेलीविजन सीरियलों (धारावाहिकों) तथा टेलीविजन नाटकों के माध्यम से नाटक का बहुआयामी और लोकप्रिय रूप विकसित हो रहा है। अतः यह कहा जा सकता है कि आज हिन्दी नाटकों का विकास नई दिशाओं एवं कई रूपों में हो रहा है जो हिन्दी नाटक के लिए एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

संदर्भ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास–रामचन्द्र शुक्ल, पृ.–312
2. हिन्दी साहित्य कोश–भाग–2, धीरेन्द्र वर्मा, पृ.–565
3. वही, पृ.–566
4. हिन्दी गद्य–साहित्य–डॉ. रामचन्द्र तिवारी, पृ.–736
5. वही, पृ.–737
6. वही,, पृ.–84
7. वही, पृत्र–812